कल समाचार सुना कि नाम होता है कि कोई ये संस्था बहुत बड़ी है जो इतना खर्चा करती है। जो हमको कोई शहर में कोई भी आर्य समाजी या साधु,संत,महात्मा सामना नहीं कर सके। गामरे में सामना करते हैं ना। कोई आर्य समाजी बखेड़ा डालते हैं। वहाँ बखेड़ा नहीं डाले। दिल्ली में भी बखेड़ा डालते हैं। तो वहाँ शिमले में भी अगर ऐसी प्रदर्शनी होगी, बाबा ने तो देखी नहीं, बाबा समझ सकते हैं। फिर भी कोई मकान तो नहीं देखा। मकान तो इन्होंने देखा। मकान बहुत बड़ा है। पहले लिखा था शायद कि इतना किराया है। याद नहीं। (किसी ने कहा– काँच का बना हुआ है) ...बाकी उनसे कोई बैठ करके समझे या फिर आ करके समझे, कोई विरला आता होगा। वो समाचार आएगा तीन–चार रोज़ के बाद। जब देखेंगे कोई समझने के लिए आते हैं, किसी में रंग लगा आती है, यह समझना बहुत ज़रूरी है या उन्होंने समझाया उनको कि अभी ये विनाश के पहले बाप का वर्सा पाना है। इसमें ऐसे नहीं कि बस, देखा इनमें कुछ। अरे नहीं, यहाँ तो आ करके समझने से बेहद के बाप से वर्सा लेना है। तो कोई–न–कोई निकल पड़ेगा। बहुतों को समझाया, कोई की बुद्धि में कुछ–न–कुछ बैठा हुआ होगा, प्रजा तो बन गई ना। प्रजा तो ढेर बननी है ना। बाकी जो बाबा कहते हैं– कोटन में कोउ, कोउ में कोउ, सो वो राजधानी का पद बोलते हैं; क्योंकि वास्तव में इनका नाम तो राजयोग है ना। तो विजय माला में पिरोना, राजाई...में आना, ये बहुत थोड़े होंगे। ये विवेक भी ऐसा कहता है कि प्रजा बहुत...। तो इस प्रकार से ये ड्रामा में ये प्रकार है प्रजा का वृद्धि करने। तो देखो, कितने आते हैं! ..... आदमियों ने देखा होगा 25/30 हज़ार डोनेशन देखेंगे। कहेंगे, बॉम्बे में मनुष्य कितने हैं, मालूम है तुमको ? पीछे किसे मालूम है, कितने हैं? 50 लाख? 40 लाख। अभी 40 लाख में अगर ये 25 हजार आए–गए और ऐसे ही देख करके गए। उसमें भी छोकरे,बाकड़े,ये–वो, बहुत ही आए होंगे। इनमें कोई समझो कि 5 हज़ार से 15,20,25 या 30 कोई प्रजा में जाने वाले होंगे और इनमें से कोई समझने आवे तो.....बस ऐसे ही। बाकी तो सभी देख करके और ये गए। ये बड़ी समझने की चीज़ है वास्तव में; परन्तु अभी हिम्मत करके, गवर्मेन्ट को पकड़ करके और कोई से ये हॉल ले लेवे। फिर भले 5/6 सौ किराया भी लगे और .... दे दे तो हम वहाँ प्रदर्शनी भी खोल देवें। कोई भी ऐसे हॉल मिले, सिर्फ हॉल, जो जा करके मनुष्य रोज़ देखकर आवे और बच्चियाँ उनको समझा दें। तो भी बाबा ले लेवें, अगर ये पुरुषार्थ करेंगे तो। इसमें भी और वहाँ दिल्ली में भी। दिल्ली में तो बड़ा चाहिए बहुत अच्छा जो कोई भी... क्योंकि इनमें कोई जात–पात की बात नहीं है। कोई–2 मजहबी पागल होते हैं ना। वो कहते हैं– ऐसा न हो कि मैं अपने धर्म को छोड़ करके इस धर्म में आवें; परन्तु वो बात ही नहीं है। ये तो है ईश्वरीय धर्म में जाने का यानी अपन को बेहद के बाप से वर्सा पाने की चीज़। इसमें कोई धर्म–वर्म की तो बात ही नहीं है। यहाँ तो समझाया जाता है– मैं हिन्दू हूँ, मैं मुसलमान हूँ, नहीं। ये बातें यहाँ नहीं हैं। मैं आत्मा हूँ और बाप को याद करना है, जिससे हमारे जो पाप हैं सिर के ऊपर, जो पतित बन गए हैं, वो भस्म हो जाए और फिर बाप का वर्सा मुक्तिधाम–जीवनमुक्तिधाम का मिल जावे। पहले मुक्ति में रहेंगे, पीछे जीवनमुक्ति में भी आएँगे। तो बाप से मुक्ति और जीवनमुक्ति का

वर्सा लेना है। ये समझाना है उनको। भई जो वहाँ होंगे, जितना दिन था, वो पूरा अनुभव आकर बताएँगे। तो वो बच्चियाँ आ जाएंगी 3/4 रोज़ के अन्दर। क्यों? नहीं, कल भी आ सकती हैं। क्या लिखा है? 30 तारीख पहुँचेंगी। आज 26 है। 30 तारीख यहाँ पहुँच जाएँगी। 4 रोज है। इनके आगे कोई और भी पहुँच जावे। ब्राह्मण ... चक्रधारी तो हो ही और इसमें भी अभी स्वदर्शन–चक्र भी दिखा हुआ है देखो, ये स्वदर्शन–चक्र जानने से सृष्टि के आदि–मध्य–अंत को तुम ये पद पा सकेंगे। विष्णुपुरी में आ सकेंगे। ये समझाना है। तुमको समझाने के लिए थोड़े चित्र भेजे तो हैं। खुले रखे हैं या बंद रखे हैं? और थोड़ी सावधानी भी रखना। ऐसी कोई चीज़ न रखना जो आदमी ले जावे। बाबा है, ब्रह्मा द्वारा कहते हैं मुझे याद करो। देखो, ये पक्का याद कर दो कि बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा। मैं गारंटी करता हूँ और फिर मेरा वर्सा तुमको मिल जाएगा। और तो कोई तकलीफ ही नहीं है वर्सा पाने की। ये जो भक्तिमार्ग में रास्ता ढूँढ़ते हैं भगवान से मिलने का। तो भगवान से मिलने का रास्ता तो मिल नहीं सकेगा। भगवान को तो आ करके रास्ता बताना है। इसलिए वो जो भगत हैं, जब भक्ति का समय पूरा होता है, तो देखो, अभी बाप आया हुआ है। ...अक्षर ही दो। बहुत समझाना। बाबा कहते हैं– 'बाबा–2' कहते रहना। मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म विनाश होगा। और कोई उपाय नहीं है। और फिर मेरा वर्सा। तो जबकि लौकिक बाप है तो ऐसा पतित से पावन तो नहीं बनाते हैं, न स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। ये बाबा तो सिर्फ कहते हैं कि मुझे याद करो और स्वर्ग को याद करो और पवित्र रहो और है तुम्हारा सबका अंतिम जन्म ; क्योंकि मौत सामने खड़ा है। ऐसे–2 उनको समझाते रहो अच्छी तरह से। फिर कोई आवे तो वो दूसरा भी चित्र है ना। वो तुमने कहाँ बाहर में लगा दिया है शायद, जो–2 हमने दिया था फ्रेम वाले। बरामदे में आकर कहाँ वो खड़ा रहता है जो समझावें, उनको ऊपर ही तो समझाना है। हॉल के अन्दर लगाना चाहिए जहाँ समझाना है। बाहर के अन्दर नहीं। बाहर के अन्दर सिर्फ एक बोर्ड है, जो बाबा ने दिया– बहनों और भाइयों, आकर समझो, बस। वो भी अन्दर। बाहर में कोई ले न जावे निकाल करके। (किसी बहन ने कहा– नहीं बाबा, ऐसी जगह नहीं उठाकर ले जाएं, वो जाली की...लगी हुई है) अच्छा, तो बस फिर बाहर से भी पढ़ सकेंगे। (किसी ने कहा– बाहर तो बस एक बोर्ड है) । (म्युज़िक बजा)

मीठे–2 सर्विसेबुल बच्चों प्रति बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट।